नैक (NAAC) द्वारा "A" ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

जनसंपर्क विभाग- Ph./Fax: 07152-252651 मो.9960562305 इ-मेल: mgahvpro@gmail.com

वेबसाइट : www.hindivishwa.org

हिंदी विश्वविद्यालय में हिंदी में भाषा प्रयोग विषय पर दो दिवसीय कार्यशाला सम्पन्न

आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ का आयोजन

वर्धा, 2 फरवरी 2016: महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ (IQAC)

द्वारा 'हिंदी में भाषा प्रयोग (उच्चारण एवं लेखन)' विषय पर 30 एवं 31 जनवरी को दो दिवसीय कार्यशाला का

आयोजन किया गया । कार्यशाला का शुभारंभ विश्वविद्यालय के माननीय प्रति कुलपति प्रो॰ आनंद वर्धन शर्मा एवं भाषा विज्ञान के पूर्व अध्यक्ष प्रो॰ उमा शंकर उपाध्याय द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया । इसके उपरांत

कार्यक्रम का संचालन कर रही आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ की समन्वयक डॉ॰ शोभा पालीवाल ने कार्यशाला में आमंत्रित अतिथियों का स्वागत करते हुए कार्यशाला के उद्येश्य पर विस्तार से प्रकाश डाला उन्होंने बताया कि इस कार्यशाला का प्रयोजन हिंदी में भाषा प्रयोग के दौरान होने वाली अशुद्धियों एवं त्रुटियों के प्रति जागरूक करना है । साथ ही यह सिखाना है कि उच्चारण एवं लेखन के स्तर पर अच्छी व शुद्ध भाषा का प्रयोग कैसे किया जाए । स्वागत सत्र में सर्वप्रथम माननीय प्रति-कुलपति महोदय का स्वागत पुष्प गुच्छ देकर प्रो॰उमा शंकर उपाध्याय जी ने किया । इसके उपरांत प्रतिकुलपति महोदय प्रो. आनंद वर्धन शर्मा ने आशीर्वचन के रूप में प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा कि इस तरह की कार्यशाला का उद्देश्य आप की भाषा का परिमार्जन और परिष्कार करना है ताकि आप लोग भाषा के व्यवहार में अशुद्धियाँ न करें । उन्होंने यह भी कहा कि हमें यह प्रयास करना चाहिए कि मानक भाषा का प्रयोग करते समय हमारी बोली के तत्व मानक भाषा में न आए । भाषा का स्वरूप सचमुच मानक होना चाहिए । उन्होंने अखबारों में प्रयुक्त हो रही भाषा की ओर संकेत करते हुए कहा कि अब अखबारों की

भाषा खिचड़ी भाषा है । उसमें हिंदी का मानक स्वरूप नहीं है । हिंदी भाषा की वैज्ञानिकता को स्पष्ट करते हुए कहा कि हिंदी पूर्ण वैज्ञानिक भाषा है इसमें हम जैसा बोलते हैं वैसा ही लिखते हैं अपने इस कथन के प्रमाण के लिए उन्होंने हिंदी और अँग्रेजी के कई उदाहरण भी दिये । माननीय कुलपति महोदय ने प्रतिभागियों को भाषा के संबंध में सुझाव देते हुए कहा कि भाषा-दोष पाठन से दूर हो सकता है । यदि वे हिंदी के अच्छे समाचार पत्रों का पाठन करें और जिन लोगों कि भाषा अच्छी है उनसे संवाद करें तो निश्चित रूप से अपनी भाषा में सुधार कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त भाषा में सुधार के लिए उन्होंने भाषा के अभ्यास पर भी ज़ोर दिया ।

कार्यशाला के प्रथम सत्र में भाषा विज्ञान एवं भाषा प्रौद्येगिकी विभाग के अध्यक्ष डॉ॰अनिल कुमार पांडे ने हिंदी की ध्वनि एवं लिपि संरचना विषय पर प्रतिभागियों के साथ चर्चा की । उन्होंने कहा कि भाषा के

संदर्भ में ध्वनियों का विशेष महत्व है और हिंदी व्याकरण में ध्वनि व्यवस्था को खंड्य और खंड्यतर ध्वनि के रूप में दो भागों में बाटा गया है । उन्होंने स्वरों और व्यंजनों को भी स्पष्ट करते हुए बताया कि आधुनिक संदर्भों में वायु के अवरोध के आधार पर स्वर और व्यंजन की व्यवस्था व्याकरण में की गई है । डॉ॰पांडे ने कहा कि हिंदी वर्ण माला में ग्यारह स्वरों का वर्णन है । लेकिन उच्चारण की दृष्टि से दस ही स्वर है । इन स्वरों को ह्रस्व, दीर्घ और प्लुत स्वर के रूप में तीन भागों में विभक्त किया गया है । वर्ण माला के दस स्वरों में केवल तीन ही ह्रस्व स्वर है । बाकि अन्य सात स्वर दीर्घ स्वर के अंतर्गत आते हैं । इसके अतिरिक्त डॉ॰अनिल कुमार पांडे ने हिंदी की व्यंजन ध्वनियों पर चर्चा करते हुए बताया कि प्रमुख व्यंजन वर्गों को स्पर्शी ध्वनियाँ कहा जाता है । इनमें कुछ ध्वनियाँ अल्प प्राण होती है तो कुछ महाप्राण, कुछ सघोष होती है तो कुछ अघोष । जिन व्यंजनों के उच्चारण में वायु का बल कम लगता है उन्हे अल्प प्राण कहते हैं और जिनमें वायु का बल अधिक लगता है उन्हे महाप्राण । इसी प्रकार जिन व्यंजनों के उच्चारण में स्वरतंत्र में कंपन्न अधिक होता है । उन्हें सघोष ध्वनियाँ कहा जाता है

और जिनमें कम कंपन्न होता है, वे अघोष ध्वनियाँ कहलाती है । सत्र के अंत में उन्होंने अनुस्वार और अनुनासिकता में अंतर स्पष्ट करते हुए पंचम वर्ण के महत्व को रेखांकित किया । साथ ही संयुक्त व्यंजनों की संरचना पर विस्तार से प्रकाश डाला ।

कार्यशाला के दूसरे सत्र में 'मानक हिंदी' वर्तनी का प्रयोग और वर्तनी गत अशुद्धियाँ, समस्या एवं निराकरण' विषय पर प्रतिभागियों से संवाद करते हुए भाषा विज्ञान विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो॰उमा शंकर उपाध्याय ने कहा कि वर्तनी में सुधार के लिए अधिक से अधिक अभ्यास करना चाहिए क्योंकि भाषा हमारे अवचेतन में स्थित होती है और निरंतर अभ्यास के चलते वह हमारे जीवन का हिस्सा बन जाती है । इसलिए निरंतर अभ्यास के माध्यम से भाषा में वर्तनी दोष को दूर किया जा सकता है । मानक भाषा पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि

भाषा के संदर्भ में विभिन्नता नहीं होनी चाहिए । भारत में लोकतांत्रिक व्यवस्था है और इस व्यवस्था में वैविध्य और बहुवचन को प्रश्रय दिया जाता है । किन्तु भाषा में ये वैविध्य मानक भाषा के लिए उचित नहीं है । केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा मानक हिंदी का स्वरूप निश्चित किया गया है और वही स्वरूप स्वीकार्य है । लेखन में हमें विशेष रूप से सावधान रहना चाहिए कि भाषा के मानक रूप का ही प्रयोग किया जाए । इसके अतिरिक्त अनुस्वार और अनुनासिकता पर चर्चा करते हुए उन्होंने बताया कि अनुस्वार वर्ण व्यवस्था की पंचम ध्वनियों को कहा जाता है । जिनका उच्चारण मुख और नासिका विवर से होता है । जबकि अनुनासिकता हमेशा स्वर की विशेषता बताती है । सत्र के अंत में प्रो॰उमा शंकर उपाध्याय जी ने कहा कि स्वर लोप के कारण कई बार हिंदी भाषा की

वैज्ञानिकता संदिग्ध हो जाती है । इसे उन्होंने विभिन्न उदाहरणों के माध्यम से सिद्ध करते हुए बताया कि हिंदी में यह आवश्यक नहीं कि जिस प्रकार से बोला जाता है उसी प्रकार से लिखा व पढ़ा जाए, किन्तु ऐसा विशेष स्थितियों में ही होता है । उपाध्याय जी ने व्याकरणों के नियमों के माध्यम से वर्तनी दोषों की ओर संकेत किया और प्रतिभागियों को यह सुझाव दिया कि यदि वे व्याकरणों के नियमों को ध्यान में रखें तो वर्तनी दोष से बच सकते हैं ।

कार्यशाला के दूसरे दिन तीसरे सत्र में भाषा विद्यापीठ के संकाध्यक्ष डॉ हनुमान प्रसाद शुक्ला ने 'हिंदी भाषा की व्यवहारिक समस्याएँ' विषय पर प्रतिभागियों के साथ चर्चा की। उन्होंने कहा कि जटिल ध्वनि का प्रयोग प्राय: बोलचाल में नहीं किया जाता। अर्थ को लेकर ही भाषा का उद्देश्य सफल हो पाता है। भाषा कठिन नहीं होती बल्कि परिचित और अपरिचित पर निर्भर है। तथा भाषा के प्रति जब सजग नहीं होते तब भाषा खराब होती है। उन्होंने भाषा की एकरूपता की सतस्याओं पर भी चर्चा की। साथ ही भाषा के घटकों को परिभाषित करते हुए समझाया। डॉ. शुक्ला जी ने संस्कृत भाषा की पद्धतियों पर भी चर्चा करते हुए संस्कृत भाषा और हिंदी भाषा के संबंध को भी व्याख्यायित किया। हिंदी भाषा के द्वारा संस्कृत भाषा से ग्रहण किए गए समास और संधि प्रकरण

पर भी चर्चा की। इसके अतिरिक्त उन्होंने अभिव्यक्ति में सटीकता लाने के लिए सरल भाषा के प्रयोग पर विशेष बल दिया।

इस सत्र के दूसरे वक्ता भाषा विद्यापीठ के अध्यक्ष डॉ. अनिल कुमार पांडे जी ने 'शब्द संरचना और

विभक्ति प्रयोग' विषय पर वक्तव्य दिया। उन्होंने प्रतिभागियों से शब्द की संरचना ध्वनि की संरचना की चर्चा की तथा इसके साथ ही सर्वनाम, संज्ञा, विशेषण के महत्व को समझाया। इसके उपरांत डॉ. अनिल कुमार पाण्डेय जी

ने लिंग निर्धारण को व्याख्यापित किया। प्रत्येक भाषा में लिंगो की संख्या भिन्न-भिन्न हैं। संस्कृत तथा अंग्रेजी में पुल्लिंग स्त्रीलिंग एवं नपुंसक लिंग तीन-तीन लिंग की व्यवस्था दी गयी है वहीं हिंदी में दो ही लिंग पुल्लिंग व

स्त्रीलिंग हैं। सजीव शब्दों का तो लिंग निर्धारण आसानी से किया जा सकता है लेकिन निर्जीव शब्दों का लिंग निर्धारण किस आधार पर किया जाए इस पर भी उन्होंने विशेष चर्चा की।

डॉ. अनिल कुमार पाण्डेय जी ने कहा जिस शब्द के अंत में 'अ' कारांत हो वह पुल्लिंग शब्द है। इसके बाद उन्होंने प्रत्यय और विभक्ति पर बात करते हुए स्त्रीलिंग और पुल्लिंग शब्दों को पहचानने से संबंधित मुख्य-मुख्य बिन्दुओं पर बात की। उन्होंने कहा कि लिंग निर्धारण करने में प्रत्यय का महत्वपूर्ण स्थान है।

कार्यशाला के चौथे सत्र में हिंदी भाषा की समस्याएँ एवं निराकरण विषय पर प्रो. उमाशंकर उपाध्याय जी ने वक्तव्य दिया। उन्होंने कहा कि भाषा की समस्या तब खड़ी होती है जब हम भाषा को ठीक से सीखते नहीं। भाषा में त्रुटियों को हम बार-बार दोहराते हैं और उन त्रुटियों की ओर अगर हम एक बार ध्यान दें तो अगली बार त्रुटियाँ नहीं होगी। वर्तनी और व्याकरण की त्रुटियों को सुधारने की चर्चा की। उन्होंने शोध कार्य के क्षेत्र में होने

वाले वर्तनी और व्याकरण की त्रुटियों को उजागर किया। प्रो. उपाध्याय ने अनुस्वार और अनुनासिक शब्दों की भी चर्चा की। छात्राओं द्वारा ह्रस्व दीर्घ मात्राओं में होने वाली त्रुटियों पर चर्चा की। उन्होंने यह भी कहा लेखन में हमें विशेष रूप से सावधान रहना चाहिए और भाषा के मानक रूप का ही प्रयोग लेखन में किया जाए। साथ ही साथ उन्होंने प्रतिभागियों को वर्तनी और व्याकरण की अशुद्धियों को दूर करने का सुझाव दिया।

कार्यशाला का समापन कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र की अध्यक्षता में किया गया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि शब्दों का सही उच्चारण यह कला और विज्ञान है। हिंदी भाषा के शब्दों को उसके मानक रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए। उन्होंने प्रकोष्ठ से आह्वान किया कि हिंदी मानक शब्दों की एक दिग्दर्शिका बनाएँ और उसे सभी के लिए उपलब्ध कराया जाए। कार्यक्रम में कुलपति प्रो. मिश्र द्वारा वाक्य विन्यास की दृष्टि से सही लेखन करने वाले प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया। कार्यशाला में प्रतिभागियों के उत्साह को देखते हुए इसे छोटे-छोटे समूहों में आयोजित करने का सुझाव भी उन्होंने दिया। समापन सत्र का संचालन आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ की समन्वयक डॉ. शोभा पालीवाल ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन भाषा प्रोद्योगिकी विभाग के अध्यक्ष डॉ. अनिल कुमार पाण्डेय ने किया।